**श्री सत्यनारायणजी की आरती:**

**ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा। सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
रत्‍‌न जडि़त सिंहासन अद्भुत छवि राजै। नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजै॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
प्रकट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो। बूढ़ा ब्राह्मण बनकर कांचन महल कियो॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी। चन्द्रचूड़ एक राजा तिनकी विपत्ति हरी॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्हों। सो फल भोग्यो प्रभु जी फिर-स्तुति कीन्हीं॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरयो। श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी। मनवांछित फल दीन्हों दीनदयाल हरी॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल, मेवा। धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।  
.  
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावै। भगतदास तन-मन सुख सम्पत्ति मनवांछित फल पावै॥  
ओम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।।**